Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

दाम्पत्य-जीवनक मैथिली कथाक प्रकार आ वर्गीकरण

श्रवण कुमार
शोधार्थी, मैथिली विभाग
ति0 मा0 भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर

विनीत कुमार लाल दास
एम.ए. (मैथिली), स्वर्ण पदक प्राप्त, नेट
पटना विश्वविद्यालय, पटना
शोधार्थी, मैथिली विभाग ति. माँ भागलपुर
विश्वविद्यालय, भागलपुर

समाजक सभसँ छोट इकाई मनुक्ख होइत अछि। तेँ समाजक निरंतरताक लेल मनुक्खक रहब आवश्यक अछि, नहि त समाजक आ मनुक्खक अस्तित्व खतरामे पड़ि जायत। एहि खतराकेँ टालबाक लेल एक टा व्यवस्था बनल अछि जकर नाम थिक - बिआह। बिआहक माध्यमसँ मनुक्खक उत्पादन निरंतर होइत अछि जाहिसँ एकर अस्तित्वपर खतरा नहि अबैत अछि। बिआह-व्यवस्थाक आधारपर विपरीत लिंगकेँ एक संग रहबाक स्वीकृति समाज आ परिवार दैत अछि आ ओहि जीवनकेँ दाम्पत्य-जीवन कहल जाइत अछि। प्रत्येक दाम्पत्य-जीवन समाज आ साहित्यकेँ प्रभावित करैत अछि आ समाज ओ साहित्य सेहो मानव-जीवनकेँ प्रभावित करैत अछि अर्थात् दुनूक बीच अन्योनाश्रय संबंध होइत अछि।

कोनो रचनाकार अपन रचनामे ओहि बातकेँ चित्रण करैत छथि जे बात हुनक अन्तर्मनकेँ उद्वेलित, विचलित, विस्मित, प्रभावित करैत अछि। रचना करबासँ पहिने रचनाकारक मस्तिष्क समुद्र जकाँ रहैत अछि जाहिमे अनेको प्रकारक तरंगक संग ज्वार-भाटा अबैत छैक आ एहि ज्वार-भाटाक बेगसँ उत्पन्न पीड़ाकेँ शांत करबाक लेल ओ रचना करैत छथि। जखन रचनाक कार्य पूरा भ जाइत अछि तखन हुनक मानसिक स्थिति बिहारि चलि गेलाक बादक समय सन भ जाइत छनि। दाम्पत्य-जीवन एहन जीवन थीक

जे सभकेँ प्रभावित करैत अछि आ एहिसँ रचनाकार लोकनि सेहो अछूता नहि छथि। तेँ रचनाकार लोकनिक रचनामे दाम्पत्य-जीवनक झलक अवश्य भेटैत अछि। चाहे ओ सुखमय दाम्पत्य-जीवन होय वा दुःखमय दाम्पत्य-जीवन। किनको रचनामे सुखमय दाम्पत्य-जीवनक चित्रण रहैत अछि त किनको रचनामे दुखमय दाम्पत्य-जीवनक चित्रण रहैत अछि। मैथिली कथामे दुनू प्रकारक दाम्पत्य-जीवनक कथा देखबामे अबैत अछि।

‘‘जे भाषा आइ ‘मैथिली‘ नामे जानल जाइत तकर उल्लेख सर्वप्रथम यूरोपीय विद्वान कोलब्रुक द्वारा 1801 ई.मे भेल छल। डा. ग्रियर्सनक अनुसार कोलब्रुक अपन संस्कृत तथा प्राकृत संबंधी अनुसंधानात्मक विनिबंधमे मैथिलीक बंगलाक संग संबंधपर विचार कयने छथि तथा ओही क्रममे ईहो लिखने छथि जे जेँ मैथिली भाषाक प्रयोग साहित्यमे नहि होइत अछि तेँ एहि संबंधमे विशेष लिखब अनावश्यक अछि। एकर पश्चात सिरामपुरक मिशनरी लोकनि अपन सोसाइटीक 1816 ई.क 67म मेमाआयरमे अन्य आर्यभाषा सभक संग तुलना करैत मैथिलीक उल्लेख कयने छथि। मैथिलीक दोसर नाम ‘तिरहुतिया‘ सेहो भेटैत अछि। एकर उल्लेख सन् 1771 ई०क बेलिगतीकृत ‘अल्फाबेटुम ब्राह्मनिकम‘क अम्दुजक भूमिकामे भेल अछि। एहिमे कतोक भाषाक संग तुरूतियन (Tourutians) अथवा ‘तिरहुति‘क उल्लेख सेहो भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त फैलेन, हार्नले, केलोग तथा ग्रियर्सन सदृश भाषाशास्त्रक विद्वानलोकनिक स्वरचित ग्रंथ सभमे सेहो समय-समयपर एहि नाम सभक उल्लेख भेल अछि किन्तु एकर प्राचीनतम उल्लेख ‘आइने अकबरी‘मे भेटैत अछि जतय लेखक एकरा एक टा पृथक भाषाक रुपमे स्वीकार कयने छथि। मिथिलामे मैथिली भाषाक हेतु सर्वप्रथम विद्यापति ‘देसिल बयना’ शब्दक प्रयोग कयलनि-

देसिल बयना सब जन मिट्ठा।
तेँ तइसन जम्पओ अवहट्ठा ।।

हिनक पश्चात् 17 शताब्दी लोचन अपन रागतरंगिनीमे विद्यापति पदावलीक भाषाक हेतु 'मिथिलापभ्रंश' शब्दक प्रयोग कयने छथि-

देश्यामपि स्वदेशीयत्वात् प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया।
श्रीविद्यापति कवि निबद्धास्ता मैथिलीगीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।।''[1]

मैथिली भाषाक सभसँ प्राचीन उपलबध गद्य ग्रंथ थिक - कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर'। एहि ग्रंथमे मैथिली भाषाक प्राचीनतम स्वरूप देखबामे अबैत अछि। मैथिल लोक द्वारा कथा लिखल सर्वप्रथम संस्कृत ग्रंथ 'पुरुष परीक्षा' अछि जकर कथाकार छथि - कविकोकिल महाकवि विद्यापति। आधुनिक कालमे सबसँ पहिने कवीश्वर चंदा झा 'पुरुष परीक्षा'कँ मैथिलीमे अनुवाद क कथाक स्वरूपसँ परिचय करओलनि। एकर बाद संस्कृत ग्रंथक आख्यायिका सभकँ मैथिलीमे अनुवाद करल जाय लागल। फेर दोसर भाषासँ सेहो मैथिलीमे अनुवाद करल जाय लागल जाहिमे ''अंगरेजीसँ इसोपक नीतिकथा (दुइगोट), शेक्सपियरक 'टेम्पेस्ट'क 'कमला', गोल्ड स्मिथक 'बेकफिल्ड पादरी' ओ जानशनक 'राजकुमार रसेलस' आदिक अनुवाद कएल रमानन्द ठाकुर, वैद्यनाथ चौधरी, डा. उमेशमिश्र, दीनानाथझा प्रभृति। तहिना बंगलासँ अनुदित भेल शिवनन्दन चौधरी द्वारा 'कपालकुण्डला' ओ 'मृण्मयी', काशीनाथझा द्वारा 'मायाशंकर', 'युगलांगुरीय' ओ 'राजपूतजीवन संध्या' ओ जीवछमिश्र द्वारा 'विचित्र रहस्य', छेदीझा द्वारा 'महाराष्ट्र जीवन-प्रभात' ओ 'सीतावनवास', सुमनजी द्वारा 'दर्पचूर्ण', 'निष्कृति' ओ 'युगलांगुरीय', भुवनजी द्वारा 'विषवृक्ष', श्रीव्यास जी द्वारा 'बाभनकबेटी' आदि आदि।''[2]

''1930 ई.क पूर्वक गल्पसाहित्य अछि मुख्यतः प्राचीन रीतिक- अधिकांश संस्कृतकथाक अनुवाद वा स्वतंत्र रूपेण रचित ताही प्रकारक कथा। जकरा आधुनिक रीतिक कथा कहैत छिऐक, तकरहु तत्व यत्किंचित् 1930 ई.क पूर्वक कथासभमे भेटैत अछि। वस्तुतः उपन्यासक अतिरिक्त आन जे कथासाहित्य मैथिलीमे अछि, से आधुनिक

गल्पक पूर्व-रूप कहल जा सकैत अछि आओर ओहि मध्य आधुनिक गल्पक मुख्य-मुख्य गुण भेटैत अछि यथा- कुतूहलता, विविधता, अद्भूतता, रोमांटिक भावना प्रभृति। आगाँ कथामे उपदेशात्मकताक बीज बेशी स्फूट भेल तथा अधिकांश गल्पक निकटक वस्तु छल हास्याव्यंग्यमूलक लोककथा, मुख्यतः गोनूझाक हास्यकथा, जकरा श्री नगेन्द्रकुमरक पिता

कुशेश्वरकुमर संकलित कएल 'गोनूविनोद'क नामसँ। वीरबलक कथा सेहो एहि शताब्दीक तीन-चारि दशक धरि बेस कहल-सुनल जाइत छल।"[3]

साहित्य आ समाजक जखन सम्यक रूपसँ अध्ययन करैत छी त देखबामे अबैत अछि जे दाम्पत्य-जीवन विभिन्न प्रकारक होइत अछि। अध्ययनक दृष्टिकोणसँ एकरा निम्नलिखित रूपेँ वर्गीकृत करल जा सकैत अछि-

1. परिवारक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. एकल पारिवारिक दाम्पत्य-जीवन आ
    2. संयुक्त पारिवारिक दाम्पत्य-जीवन।
2. सामाजिक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. समाज द्वारा स्वीकृत दाम्पत्य-जीवन आ
    2. समाज द्वारा अस्वीकृत दाम्पत्य-जीवन।
3. सामाजिक प्रतिष्ठाक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. प्रतिष्ठा सहित दाम्पत्य-जीवन अर्थात प्रतिष्ठित दाम्पत्य-जीवन,
    2. प्रतिष्ठा रहित दाम्पत्य-जीवन अर्थात अप्रतिष्ठित दाम्पत्य-जीवन,
    3. सामान्य दाम्पत्य-जीवन।

4. संतानक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. संतानबाला दाम्पत्य-जीवन

1. वैध संतानबाला
2. अवैध संतानबाला
3. दत्तक संतानबाला।

2. निःसंतान दाम्पत्य-जीवन

1. प्राकृतिक रूपसँ निःसंतान दाम्पत्य-जीवन
2. अप्राकृतिक रूपसँ निःसंतान दाम्पत्य-जीवन।

5. संतान-दुख प्राप्त दाम्पत्य-जीवन।

1. संतानक सुख प्राप्त दाम्पत्य-जीवन।
2. संतानसँ दुख प्राप्त दाम्पत्य-जीवन।

6. वैवाहिक स्थितिक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. अखंडित दाम्पत्य-जीवन, 2. खंडित दाम्पत्य-जीवन।

7. भोगक आधारपर अखंडित दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. सुखमय अखंडित दाम्पत्य-जीवन आ
2. दुखमय अखंडित दाम्पत्य-जीवन।

8. आर्थिक स्थितिक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. आर्थिक सम्पन्न दाम्पत्य-जीवन,
2. मध्यम वित्त दाम्पत्य-जीवन आ
3. आर्थिक विपन्न दाम्पत्य-जीवन।

9. आयक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. उच्च आयबाला दाम्पत्य-जीवन,
2. मध्यम आयबाला दाम्पत्य-जीवन,

3. निम्न आयबाला दाम्पत्य-जीवन आ

4. ऋणमे डूबल दाम्पत्य-जीवन।

10. व्ययक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. वेगरताक अनुसार खर्च करयबाला दाम्पत्य-जीवन,

2. अथाह खर्च करयबाला दाम्पत्य-जीवन,

3. बेगरतासँ कम खर्च करयबाला दाम्पत्य-जीवन आ

4. ऋण ल क खर्च करयबाला दाम्पत्य-जीवन।

11. भोगक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. सुखमय दाम्पत्य-जीवन,

2. दुखमय दाम्पत्य-जीवन आ

3. मिश्रित दाम्पत्य-जीवन।

12. चरित्रक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. चरित्रवान दाम्पत्य-जीवन आ 2. चरित्रहीन दाम्पत्य-जीवन।

13. दृश्यक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. प्रत्यक्ष दाम्पत्य-जीवन आ 2. अप्रत्यक्ष दाम्पत्य-जीवन।

14. निवास स्थानक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण

1. ग्रामीण दाम्पत्य जीवन

1. अस्थायी दाम्पत्य-जीवन आ

2. स्थायी दाम्पत्य-जीवन।

2. नगरीय दाम्पत्य-जीवन

1. अस्थायी दाम्पत्य-जीवन आ 2. स्थायी दाम्पत्य-जीवन।

3. महानगरीय दाम्पत्य-जीवन

1. अस्थायी दाम्पत्य-जीवन आ 2. स्थायी दाम्पत्य-जीवन।

15. आवासक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. स्थायी आवासीय दाम्पत्य-जीवन आ
    2. अस्थायी आवासीय दाम्पत्य-जीवन।
16. प्रवासक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. प्रवासी दाम्पत्य-जीवन
        1. एक बेर प्रवास कयल दाम्पत्य-जीवन आ
        2. अनेक बेर प्रवास कयल दाम्पत्य-जीवन।
    2. अप्रवासी दाम्पत्य-जीवन।
17. काजक आधारपर सेहो दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. जाहिमे केवल पुरूष काज करैत अछि।
    2. जाहिमे केवल स्त्री काज करैत अछि।
    3. जाहिमे दुनू (स्त्री-पुरूष) काज करैत अछि।
    4. जाहिमे दुनू (स्त्री-पुरूष) काज नहि करैत अछि।
18. स्वभावक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक वर्गीकरण
    1. शांत दाम्पत्य-जीवन
        1. आंशिक शांत दाम्पत्य-जीवन,
        2. पूर्णतः शांत दाम्पत्य-जीवन।
    2. झगड़ाह दाम्पत्य-जीवन,
    3. झगड़ा लड़ाओन दाम्पत्य-जीवन,
    4. झगड़ा छोड़ाओन दाम्पत्य-जीवन,
    5. वाचाल दाम्पत्य-जीवन,
    6. मितभाषी दाम्पत्य-जीवन,
    7. परोपकारी दाम्पत्य-जीवन,

8. अहितकारी दाम्पत्य-जीवन,

9. अहंकारी दाम्पत्य-जीवन,

10. अहंकार-रहित दाम्पत्य-जीवन।

19. शिक्षाक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक प्रकार

1. अशिक्षित दाम्पत्य-जीवन,

2. अल्प-शिक्षित दाम्पत्य-जीवन,

3. सामान्य शिक्षित दाम्पत्य-जीवन,

4. शिक्षित दाम्पत्य-जीवन आ

5. सुशिक्षित दाम्पत्य-जीवन।

20. आयक स्रोतक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक प्रकार

1. वैध स्रोतक आधारपर दाम्पत्य-जीवनक कथाक प्रकार

1. कृषिपर आधारित दाम्पत्य-जीवन,

2. व्यवसायपर आधारित दाम्पत्य-जीवन,

3. नोकरीपर आधारित दाम्पत्य-जीवन,

4. दलालीपर आधारित दाम्पत्य-जीवन।

2. अवैध स्रोतक आधारपर दाम्पत्य-जीवन प्रकार

1. चोरि, डकैती, लूटपाट, छिनतइ, बटमारि आदिपर आधारित दाम्पत्य-जीवन,

2. तस्करीपर आधारित दाम्पत्य-जीवन,

3. अवैध व्यापारपर आधारित दाम्पत्य-जीवन आ

4. अवैध दलालीपर आधारित दाम्पत्य-जीवन।

उपरोक्त विश्लेषणसँ दाम्पत्य-जीवनक प्रकार आ ओकर वर्गीकरण स्पष्ट भ जाइत अछि आ जतेक दाम्पत्य-जीवनक प्रकार होइत अछि ओतबे प्रकारक दाम्पत्य-जीवनक कथा होइत अछि।

मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकारमे जे दाम्पत्य-जीवनक कथाकार छथि- हरिमोहन झा, किरण जी, मनमोहन झा, योगानंद झा, नगेन्द्र कुमर, व्यास जी, मणिपद्म, सुधांशु शेखर चौधरी, शैलेन्द्र मोहन झा, ललित, मायानंद मिश्र, राजकमल, रामदेव झा, रमानंद रेणु, उमानाथ झा, सोमदेव, हंसराज, अमर जी, राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन, धूमकेतु, सुभाष चन्द्र यादव, महाप्रकाश, बी. झा, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, जीवकान्त, रामलोचन ठाकुर, गोविंद झा, शिवशंकर, साकेतानंद, तारानंद वियोगी, चंद्रेश, प्रदीप बिहारी, विभूति आनंद।

महिला कथाकारमे लिली रे, गौरी मिश्र, शेफालिका वर्मा, उषा किरण खान, शकुन्तला चौधरी, श्यामा झा, नीता झा, ज्योत्सना चंद्रम, बीभा रानी, निरजा रेणु, इंदिरा झा, प्रेमलता मिश्र प्रेम, सुष्मिता पाठक आदिक नाम लेल जाइत अछि।

संदर्भ संकेत

1. झा, डॉ. दिनेश कुमार: 2012; मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास; प्रकाशक- मैथिली अकादमी, पटना; पृष्ठ संख्या - 9, 10
2. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झा: 1991; मैथिली साहित्यक इतिहास; प्रकाशक - भारती पुस्तक केन्द्र, टावर चौक, दरभंगा; पृष्ठ सं०- 337, 338
3. उपरोक्त, पृष्ठ सं०- 377